International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिंदी कविता मे स्त्री विमर्श

डॉक्टर सारिका धोंडिराम शेप

सारांश

विमर्शों के इस दौर में आज स्त्री–विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय है। हिंदी सहित्य में लगभग पिछले दो–तीन दशक से स्त्री–विमर्श पर चर्चाएं हो रही हैं। सभी नारीवादी साहित्यकारों ने स्त्री–विमर्श को अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है। स्त्री–विमर्श के हर पहलू को समझने की कोशिश की उसी के परिमाण स्वरूप स्त्री–विमर्श का यह रूप आज हमारे सामने वैसे तो स्त्री–विमर्श स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद की संकल्पना है, किन्तु बीसवीं शदी के अन्तिम दो दशकों में इस विचार धारा को पनपने के लिए उपयुक्त परिवेश मिला । स्त्री–विमर्श आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव के साथ समता और समानाधिकार की पहल का ही दूसरा नाम है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य स्त्री को उसके अस्तित्व के प्रति सजग करना उसे 'मैं' की चिंता का अहसास कराना, स्त्री को मानवीय बनाना, पुरूष के समान उसे भी इंसान समझना, उसके दुःख दर्द के कारणों से समाज को अवगत कराना और उनको दूर करने का प्रयास करना है।

मुख्य शब्दः *स्त्री–विमर्श* , *कविता*

प्रस्तावना

अधिकतर विद्वानों का यह मानना है कि स्त्री विमर्श वास्तव में पुरुष विरोधी विमर्श है। यह उनका पूर्वाग्रह है। इससे निजात की जरूरत है। वास्तव में स्त्री लेखन में निम्न प्रमुख मुद्दे प्रमुखता से आते हैंः– स्त्रियों की पीड़ा, स्त्रियों की महत्वकांक्षाएँ,परिवार तथा समाज का संघर्ष, भक्ति रचनाएँ एवं स्त्रीवादी रचनाएँ इत्यादि। इस तथ्य को यदि नारीवादी लेखन से जोड़कर देखें तो कुछ तथ्य और सामने निकलकर आयेंगे। वर्तमान में नारीवादी लेखन की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई, क्योंकि सामान्य लेखन अर्थात परम्परावादी लेखन ने नारीवादी लेखन की पूरी उपेक्षा की। इसी लिए स्त्री लेखन की उत्पत्ति होनी आवश्यक थी क्योंकि सामान्य लेखन में स्त्री का हित विलोपित था। सामान्य तौर पर ऐसा माना जाता है कि स्त्री लेखन (विमर्श भी) चौतरफा संघर्ष करता है– सवर्ण समाज, परिवार, सामान्य पुरुष एवं सामान्य स्त्री विमर्श आदि। लेकिन सामान्य स्त्री विमर्श ने इस विमर्श को लेकर या तो चुप्पी साध ली या विमर्श मानने से ही इंकार कर दिया। इस कारण यह विमर्श और उग्र होता गया। हिन्दी भाषा में कई लेखिकाएँ स्त्री विमर्श हेतु अपनी लेखनी से समाज को अवगत करा रही हैं। लेखनी की उग्रता ने प्राकृतिक नियमों तक को चुनौती दे डाली है।

हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श

समकालीन कविता के क्षेत्र में केदारनाथ अग्रवाल एक साक्त हस्ताक्षर हैं। केदारनाथ अग्रवाल की कविता में तीन तरह की स्त्रियां हैं। एक वह जो समाज के शोषित वर्ग–किसान, श्रमिक, दलित की स्त्री है, जो प्रत्यक्षतः उनकी कविता में नहीं आती है, लेकिन वहां अप्रत्यक्ष तौर पर उसकी पीड़ा का बयान है। केदार जी की संवेदनशीलता का सूक्ष्म रूप है, जो कविता में बहुत खुबसूरती से छुपी होने के बाद भी संप्रेषित हो जाती है। आपके इस विचार की पुष्टि निम्नलिखित पंक्तियों से होती है–

पंचो, सुनो खबरिया

रम्मू लड़ा मुकदमा

प्यारी के मन मोहन गहने

अंग–अंग से उतर–उतर कर

बिना बजे, वो बोले, चुप के

गिरे गहन में जाकर पहुंचे

डूब सेठ दुकनिया।1

भारत के किसी भी गांव के किसान–पत्नी की बेबसी का चित्र यहां उभरकर आता है और चाहे यह न कहा गया हो कविता में तब भी स्पष्ट हो जाता है कि किसान की स्त्री को विषमता की दोहरी मार सहन होती है। एक तो गरीबी, दूसरी लैंगिक जहां उसे हमेशा अपने पति के फैसले को ही अपना सला मानकर स्वीकार करना होता है। उसे खेत–खलिहान की जिम्मेदारियां भी भुगतनी होती है और घर–गृहस्थी की भी।

और यह सिलसिला जन्म के साथ ही आरंभ हो जाता है। 'आंख दुखो ं से आज हो रही है' कविता स्त्री के पूरे जीवन की त्रासदी का मार्मिक बयान है

बारह बरस व्यथा मे ं बीते, तरहवे ं मे ं पां वधरे है

पीर हृदय में ,नीर नयन में ,सां सो ं मे ं संताप भरे है

दंभक पाड़ित और प्रताड़ित शैशव का अभिशाप लिए है

फूलो ं के नादान अधर से, शूलो ं के अपमान पिए है2

उपर्युक्त कविता केदार की दूसरी श्रे णी की स्त्री जो उनकी कविता ममे ं स्पष्ट रूप से मौजूद है – गरीबी और पितृसत्तात्मक सामाजिक सं रचना के जकड़नो ं से त्रस्त स्त्री जो पेट की आग बुझाने के लिए रोज बलात्कार झेलने को अभिशप्त है –

वह जाकर चली आती है रूपये लेकर/

बलात्कार भोग कर/

दूसरों के साथ/

ब्याह गए/

बुदू के साथ/

समाज की आंखो ं मे ं जीने के लिए/

कैद और कुंठित।3

ऐसी स्त्री के प्रति केदारनाथ अग्रवाल की कविता में एक किस्म की गहरी सहानुभूति नजर आती है, जो पितृसत्तात्मक समाज में मौजूद विभिन्न किस्मों के शोषण का शिकार होती है, लेकिन प्रतिरोध नहीं करती। सर झुकाकर अपने नियति को स्वीकर कर लेती है और मान लेती है कि यही तकदी में बदा था। चाहे वह पति के इंतजार में बिना प्रेम

के सारी उम्र ही क्यों न गंवानी पड़े। ऐसा प्रतीत होता है कि पुरुष–प्रधान समाज में जिन स्त्रियों को बतौर व्यक्ति कोई बहुत करीब हैं केदार और परकाया प्रवेश कर उनके दुखों को अपना ही दुख बना लेते हैं। लेकिन जो स्त्री अपने होने को स्वयं तय करना चाहती है, जो तकदीर के नाम पर अपने हिस्से में बद लिए गए दुखों को 'पतिव्रतता' के नाम पर स्वीकार कने को राजी नहीं है, उस स्त्री को केदार अपनी कविता में नोटिस तो जरूर करते हैं, लेकिन उससे उनका रिश्ता आत्मीयता का नहीं बन पाता। उससे एक अजनबीपन, एक औपचखरिकता का रिश्ता नजर आता है। इसका उदाहरण 'मुक्ति युवती' में दृष्टिगत है

''जब अदालत पर चढ़ी

युवती चली बाहर निकलकर

दुष्टाचारी पति के मित्र दौड़े

अपहरण हेतु बल के बोंग लेकर4

इस प्रकार मुक्त युवती कविता एक घटना का बयान मात्र करती नजर आ रही है। एक पत्रकार की शैली में, बिल्कुल तटस्थ। वहां उनकी शैली अपनी आत्मीय शैली में अनुपस्थित है। यह कविता एक स्त्री के लिए दो पुरूषों के संघर्ष की गाथा को बयां कर रही है। हां इस ओर कविता में जरूर इशारा है कि, ब्याह संस्था के सभी व्यभिचारों को पवित्र मानकर उसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

केदार अग्रवाल की कविता में स्त्री का एक और रूप दृष्टिगोचर होता है – प्रेयसी और पत्नी का। केदार के यहां प्रेम का पुष्प पितृसत्ता के घेरे से बाहर समता की मिट्टी में पुष्पित और पल्लवित होता है। यही वजह है कि वह प्रेम स्त्री के प्रेमिका रूप पर ही समाप्त नहीं हो जाता है, बल्कि पत्नी रूप में भी वह प्रेम उसी ताजगी के साथ खिलता और सुवासित होता है। केदार के लिए प्रेम में स्त्री केवल ग्रहण करने वाली नहीं वरन् खसुद भी सक्रिय है। कवि प्रेम के क्षणों में दुर्वादल पर अपनी प्रियतमा के साथ लेटते हुए यह अनुभव करता है कि –

'तरु में प्रेम–विकार

लता में

पुलक वासना भार रहे

हम तुम दोनों को मद–विह्वल

चुंबन का अधिकार रहे।'5

और उस सक्रियता का स्वीकार्य और सम्मान ही केदार की कविता को प्रेम की उच्च धरातल तक पहुंचाती है और उसे स्थायी बनाती है।

स्पष्ट है कि, केदार अग्रवाल की कविता में स्त्री के विविध रूपों का चित्रण हमें मिलता है। वह रूप एक गरीब किसान परिवार के स्त्री का तो दूसरी शोषण से मुक्ति वाली स्त्री का और तिसरी प्रेयसी का।

साहित्य में समाज, राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वरूप को तलाशता है। आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वाधीन भारत से मानो सवाल पूछ रहा है। दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श साहित्य में उठने वाले ये दोनों ज्वलन्त प्रश्न हैं, जो आज अपने हिस्से की आजादी के लिए गुहार लगा रहे हैं। इन्दिरा नुपूर की कविता में इसी भावना की अभिव्यक्ति दिखायी देती हैं –

मेरा भी तो मन है उड़ूँ, पंख तोलूँ

मुझे भी तो जीवन को जीने का हक है।

मेरे पंख काटो न मुझको मिटाओ

कि बनकर चिरैया चहकने मुझे दो

मैं नन्हीं कली आज खिलने को आतुर

जरा फूल बनकर महकने मुझे दो।6

पुरूष जाति द्वारा लिखित आजतक का सम्पूर्ण साहित्य स्त्री विमर्श के अन्तर्गत सहानुभूति माना जा सकता है। किन्तु आज साहित्य में स्वानुभूति की माँग की जा रही है। क्योंकि पुरूष स्त्री की पीड़ा को सहानुभूति के रूप में ही देख सकती है और उसकी वास्तविक अनुभूति स्त्री को ही हो सकता है। मीरा ने सामाजिक विषमता और सामंन्ती व्यवस्था की यंत्रणा से उत्पन्न नारी मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी। हिन्दी समीक्षक डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी ने मीरा के पद की समीक्षा करते हुए लिखते हैं कि, ''पहली पंक्ति (हेरी म्हां तो दरद दिवाणी ....) में मीरा दरद का चित्रण करने के चक्कर में नहीं पड़ती। वह उस दरद की पहचान पाठकों, श्रोताओं को यह कहकर बताती है कि, वह बिना अनुभव के नहीं जाना जाता। अनुभूति अनुभव की स्थिति है। उस स्थिति में तजो होगा उसे ही उस 'दरद' की अनुभूति होगी।''7

भारत लंबे समय तक विदेशियों के उपनिवेश के रूप में रहा और इसे आजाद कराने के लिए असहयोग आन्दोलन एवं भारत छोड़ो आन्दोलन चलाये गये, जिसमें महिलाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण था। इस रूप में नारी जागरण को उद्घाटित करने में हमारे नेताओं के साथ काव्य का भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधुनिक हिन्दी काव्य भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगति, प्रयोग, नयी कविता, समकालीन कविता, साठोत्तरी कविता के विभिन्न प्रारूपों, गठबन्धन एवं विकास का समग्र बोध हैं। इन सब कालों में पात्र एवं सृष्टा के रूप में नारी की उलग–अलग स्थिति रही है।

भारतेन्दु युग में नारी को रीति और श्रृंगार के संकुचित दायरे से निकालकर उसे प्राचीन गौरव फिर से प्रदान करने का सफल प्रयास कवियों ने किया। इस युग में नर का नारी पर काठोर शासन था। शिक्षा के अभावन में नारी असहाय बंदिनी थी। भारतेन्दु जी ने स्त्री के प्रति देखने का पुरूष का दृष्टिकोण बदलने का प्रयास किया। स्त्री शिक्षा के प्रचार हेतु भारतेन्दु जी ने 'बाल प्रबोधिनी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा नर–नारी समानता एवं नारी मुक्ति का नारा दिया –

जो हरि सोई राधिका, जो शिव सोई शक्ति।

जो नारी सोई पुरूष, या में कछु न विभक्ति।8

द्विवेदी युग नारी चित्रण के लिए नवोत्थान का संदेश लेकर आया। नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण अपनाने का श्रेय द्विवेदी जी को जाता है। इस युग के कवियों पर कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ, आर्य समाज तथा अन्य समाजों, स्त्री सुधारवादी आंदोलनों, नेशनल कांग्रेस के परिष्कृत विचारों का भी पूर्ण प्रभाव पड़ा। इस युग में नारी उच्च भावना का प्रतीक बन गयी। श्रीधर पाठक, राम नरेश त्रिपाठी, अनूप शर्मा, द्वारिका प्रसाद मिश्र, हरिऔध, गोपाल शरण सिंह, सोहन लाल द्विवेदी, मौथिली शरण गुप्त इस युग के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इस युग के कवियों ने जहाँ एक ओर नारी के सुरम्य रूप, मधुर वाणी एवं शालीन व्यवहार का चित्रण किया है तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण भारतीय नारी में महान शक्ति के दर्शन भी किये हैं। श्रीधर पाठक की अग्रांकित पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

अहो पूज्य भारत महिला गण, अहो आर्य कुल नारी

अहो आर्य गृहलक्ष्मी सरस्वती, आर्यलोक उजियारी।9

रामनरेश त्रिपाठी रचित 'मिलन' काव्य की नववधू विजया अपने स्वामी के प्रयाण पर अत्यन्त दुखी है पर फिर भी अपने कर्त्तव्य पथ का निश्चय कर साक्षात् दुर्गा बनकर लोक सेवा में लीन हो जाती है। 'स्वप्न' खण्ड काव्य में नायिका सुमन अपने पति को कर्म मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। 'वैदेही वनवास' में कवि हरिऔध ने सीता को आधुनिक नारी के रूप में वर्णित करते हुए उसे समाज सेवी विश्व कल्याणकारी के साथ–साथ आर्य संस्कृति के आदर्शों को अपनाते हुए दर्शाया है –

है मुख्य धर्म पत्नी का, पद पंकज की अर्चा।

जो स्वयं पतिव्रता होवे, क्या उससे इसकी चर्चा।10

नारी स्वातंत्र्य के समर्थक मैथिली शरण गुप्त ने स्त्री पात्रों में श्रेष्ठ मानवीय गुणों का समावेश किया, वाल्मीकि और तुलसीदास द्वारा कलंकित एवं तिरस्कृत कैकयी को भी धन्य किया है। छायावादी काव्य में महाकवि जयशंकर प्रसाद ने नारी का चित्रण मात्र काम–पुत्तलिका के रूप में नहीं किया है बल्कि जीवन में श्रेय और प्रेय पथ पर चलने वाली एक शक्ति के रूप में चित्रित किया है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत नग पगतल में।

पीयूष–स्रोत की बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।11

पंथ के काव्य में नारी के दर्शन चार रूपों में होते हैं – देवी, माँ, सहचरी तथा प्राण। जहाँ पंथ ने प्रकृति में सर्वत्र नारी को देखा है वहाँ वह नारी को सामाजिक रूढ़ियों रूपी बंधनों से मुक्त करा उसमें चेतना के स्वर भर देना चाहते हैं। निराला साहित्य में नारी का चित्रण उच्च एवं उदात्त स्तर पर हुआ है। भारतीय विधवा का बड़ा ही कारूणिक चित्र उन्होंने खींचा है। संपूर्ण काव्य–जगत में नारी वर्णन की दृष्टि से महादेवी वर्मा का काव्य अपना विशिष्ट महत्त्व रखता है। भारतीय नारी की असहायता, उपेक्षित स्थिति का संकेत अनकी कविताओं में मिलता है, यथा –

मैं नीर भरी दुख की बदली,

परिचय इतना इतिहास यही,

उमड़ी कल थी मिट आज चली।12

छायावादोत्तर काव्य में भी नारी के विविध रूपों का विशद् वर्णन हुआ है। नारी का राष्ट्रीय स्वरूप भी इसी काल में विकसित हुआ है। नारी में राष्ट्र प्रेम के भाव भरने वाले कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखन लाल चतुर्वेदी ने नारी को राष्ट्र सेविका वीबाला के रूप में चित्रित किया है। वह पुरूषों को प्रेरित करती रहती हैं।

आधुनिक युग में अनेकानेक लेखिकाएँ आज कवयित्री के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं, जिन्होंने अपने काव्य के द्वारा भारतीय अवस्था के साथ–साथ नारी की दशा पर भी चिंतन किया है। इन कवियित्रियों में प्रमुख रूप से प्रताप कुंवरिबाई, जुगलप्रिया, चन्द्रकलाबाई, सरस्वती देवी, निधि रानी, ज्वाला देवी, रत्नकंवरि बीबी, रामकुमारी देवी चौहान तथा सुभद्रा कुमारी चौहान आदि का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता है। इन लेखिकाओं ने अपनी कविताओं के माध्यम से नारी शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य के द्वारा प्रणय भावना, वात्सल्य भावना तथा राष्ट्र प्रेम के गीत गाये हैं। स्वतंत्रता की वेदी पर केवल पुरूषों को ही नहीं नारी को भी आत्मदान करना होगा। नारी को प्रेरित करती हुई वह लिखती हैं –

अबलाएँ उठ पड़ें देश में, करें युद्ध घमासान सखी,

पन्द्रीह–कोटि असहयोगिनियाँ, दहला दें ब्रह्माण्ड सखी।।13

कवयित्री ने झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई को साहसी नारियों में उत्तम चित्रित किया है, उन्होंने नारी जीवन की सबसे बड़ी साध प्रिय को सुखी देखना बताया है। तारा पाण्डेय को भी छायावाद की गौण कवयित्री के रूप में देखा जाता है। महादेवी के काव्य में नारी की मर्मवेदना का चित्रण हुआ है, तो तारा पाण्डेय ने नारी त्याग का चित्रण किया है। सुमित्रा कुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल तथा शांति मेहरोत्रा ने हिन्दू समाज में नारी की जागरण, लोक–कल्याण तथा नारी सम्मान एवं नारी जागरूकता का स्वर मुखरित किया है–

मैं सोच रही जग में कैसे

नारी पद को उत्थान मिले

युग तो पाशविक मनुष्यों को

फिर मानवता का दान मिले।14

आठवें एवं नवें दशक की कविता में स्त्री विमर्श :

आठवें एवं नवे दशक की कवियित्रियों में इन्दिरा मित्र, इन्दु कुमारी, अनामिका, मीरा जैन, शशि तिवारी, सुनीता जैन, कमल कुमार, सुमन राजे, प्रभा खेतान, कुसुम कुमारी, मालती शर्मा आदि कुशल लेखिकाएँ हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से स्थूल शारीरिक चित्रण तथा विहेतर यौन संबंधों का चित्रण किया है। प्रेम तथा वात्सल्य का वर्णन इन कविताओं में जैसे मिलता है वैसा पुरूष द्वारा रचित स्त्री काव्य में नहीं मिलता है।

डॉ0 सुनीता शर्मा के शब्दों में, ''कवियों एवं कवियित्रियों ने नारी चित्रण करते समय उसके सौंदर्य का वर्णन किया है। साथ ही पाश्चात्य संपर्क से उनके नारी विषयक दृष्टिकोण को नयी–दिशाएँ भी मिली हैं तथा आधुनिक युग में नारी के सहयोग से विश्व की सृजनात्मक आस्थामूलक पुनर्रचना करने की संभावना ने नारी कारे पुरूष के समक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। इसे नारी के स्वास्थ भविष्य की सूचना भी कहा जा सकता है।''15

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श का विषय परम्परा से हटकर है और इसमें स्त्रियों का अत्यधिक योगदान है। इस बारे में डॉ0 सुमन राजे का विचार है कि, ''वह भारतीय परम्परा का स्वाभाविक विकास न हाकर, पश्चिमी नारी आंदोलन से प्रेरित है। इसलिए एक ओर वह अपनी सार्थक परम्परा से कट जाता है और दूसरी ओर समकालीन समाज की विषमताओं में गहरे नहीं जाता। उसके केन्द्र में भी स्त्री है और परिधि पर भी जो एक साथ छोटी भी है और बड़ी भी। छोटी इसकलए कि इस लेखन में सामान्य भारतीय नारी की छवि गायब है, और विराट इसलिए कि वह वैश्विक सन्दर्भ लिए हुए हैं। यह दिशा का रुपान्तरण है इसलिए लक्ष्य भी।16

स्त्री को प्रदर्शन की वस्तु मानकर बाजार व संस्थान जिस तरह उसे देख और दिखा रहे हैं, कविता इसके विरोध में स्त्री को खड़े होने का आह्वान कर रही है, बल्कि अपनी उपस्थिति दुनिया बदलने की उसकी जिद है –

''सुंदरियों

अपनी उपस्थिति को सिर्फ मोहक और

दर्शनीय रूप मत दिया करो

सुंदरियों

तुम ऐसा करके तो देखो

बदल जाऐगी ये दुनियाँ सारी''17

इस प्रकार, स्त्री अब व्यवस्था के छल को भी पहचानती है और अपनी स्थिति को भी। उसे यह भली–भाँति मालूम हो गया है कि वह या तो देवी बनायी जाएगी या दासी, पर मानवी नहीं बनने दिया जाएगा।

स्त्री–विमर्श में सबसे अधिक बल आज अपनी नियति बदलने पर है। बात–बात पर रोने वाली, सब कुछ चुपचाप गाय की तरह सहने करने वाली, परतंत्र स्त्री इस विमर्श की काम्य नहीं है। इसके विपरीत अपने व्यक्तित्व को आकार देती, अपनी उपस्थिति दर्ज कराती, आत्म निर्भर स्त्री ही स्त्री विमर्श की काम्य है। इस भावना को व्यक्त करती हैं, सविता सिंह की अग्रांकित कविता –

मुझे वह स्त्री पसंद है जो कहती है अपनी बात साफ–साफ

बेझिझक जितनी कहना है बस उतनास

निर्भीक जो करती है अपने काम18

समकालीन हिन्दी कविता में यह सवाल फिर सांसारिक रूप लेने लगा तथा आत्म विस्तार की उसकी बौद्धिक सोच क्रमशः विस्तृत होने लगी। वह खुद को आजाद करने के लिए अपने शरीर की राजनीति और स्वत्व के निर्माण पर चिंतित होने लगी। 'एक भूतपूर्व नगर वधू की दुर्गपति से प्रार्थना' में कत्यायनी उन सब ऐतिहासिक प्रवचनों की एक–एक कर पोल खोल देती है –

अब इतनी सकत नहीं रही

कि दिन भर मुस्करा सकूँ, अदाएँ दिखा सकूँ

निर्माता निर्देशकों को रिझा सकूँ

या दूरदर्शन पर सौन्दर्य प्रसाधनों का विज्ञापन कर सकूँ।19

निष्कर्ष

विमर्शों के इस दौर में आज स्त्री–विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय है। हिंदी सहित्य में लगभग पिछले दो–तीन दशक से स्त्री–विमर्श पर चर्चाएं हो रही हैं। हिन्दी भाषा में कई लेखिकाएँ स्त्री विमर्श हेतु अपनी लेखनी से समाज को अवगत करा रही हैं। लेखनी की उग्रता ने प्राकृतिक नियमों तक को चुनौती दे डाली है। समकालीन कविता के क्षेत्र में केदारनाथ अग्रवाल एक साक्त हस्ताक्षर हैं। केदारनाथ अग्रवाल की कविता में तीन तरह की स्त्रियां हैं। एक वह जो समाज के शोषित वर्ग–किसान, श्रमिक, दलित की स्त्री है,

संदर्भ सूची

1. आज क्रांति का शखं बज रहा है– हम विषपायी जनम के –बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पृ0–470
2. भारतीय नारी, दशा दिशा, आशारानी व्हौरा
3. स्त्रीवादी विमर्श– समाज और साहित्य– क्षमा शर्मा,
4. स्त्री विमर्श और सामाजिक आन्दोलन– डॉ0 राजनारायण
5. पुस्तक–वार्ता, 53 अंक, जुलाई–अगस्त 2014 महात्मा अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, (महाराष्ट्र) पृ0–41
6. अनामिका, दूब–धान, पृ0–37 भारतीय ज्ञानदीपपीठ प्रकाशन, प्र0स0 2008
7. अनामिका, दूब–धान, पृ0–50 भारतीय ज्ञानदीपपीठ प्रकाशन, प्र0स0 2008
8. अनामिका, अनुष्टुप, पृ०–53 किताब घर प्रकाशन, दिल्ली 1998
9. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ0–46 राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2005
10. अनामिका, दूब–धान, पृ0–48 भारतीय ज्ञानदीपपीठ प्रकाशन, प्र0स0 2008
11. अनामिका, अनुष्टुप, पृ0–51किताब घर प्रकाशन, दिल्ली 1998
12. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ0–39 राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2005

13- वही, पृ०–10.15- अनामिका, दूब–धान,पृ0–70 16- अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ0.14